पाठ -4

कठपुतली

१. कठपुतली कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए

कठपुतली कविता भवानीप्रसाद मिश्र द्वारा रचित है , जिसमें कवि ने स्वतंत्रता बारें में कहा है । कठपुतली दूसरों के इशारों पर नाचती है , एक दिन गुलामी से तंग आकर बोली - ये धागे क्यों है मेरे आगे -पीछे ? क्यों मुझे बाँधे रखा है ? तुम इन्हे तोड़ कर मुझे आज़ाद कर दो । मैं अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हूँ । एक कठपुतली के स्वतंत्र होने की इच्छा सुनकर अन्य कठपुतलियाँ भी कहने लगी कि उन्हें भी अपने मन की बात कहे बहुत दिन हो चुके है । अन्य कठपुतलियों की बात सुनकर पहली कठपुतली सोचने लगी कि इस इच्छा का क्या परिणाम होगा । क्या अन्य कठपुतलियाँ अपनी स्वतंत्रता का सही उपयोग कर पाएँगी ? अतः पहली कठपुतली सोच-समझकर कोई कदम उठाना चाहती है ।

2. कठपुतली को गुस्सा क्यों आया ?

उत्तर-

कठपुतली कविता भवानीप्रसाद मिश्र द्वारा रचित है । कठपुतली को गुस्सा इसलिए आया क्योंकि वह दूसरों के इशारों पर नाच रही थी । उसे आज़ादी चाहिए और वह अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती थी ।

3 . पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को क्यों अच्छी लगी?

उत्तर-

अवश्य पहली, कठपुतली की बात सुनकर दूसरी कठपुतलियों को अच्छी लगी होगी। परतंत्र रहना किसी को पसंद नहीं। सभी स्वतंत्र यानी आजाद रहना चाहते हैं। सभी अपने-अपने मर्जी से काम करना चाहते हैं। किसी भी कठपुतली को धागे में बंधे रहना और दूसरों की मर्जी से नाचना पसंद नहीं था। यही कारण था कि पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को अच्छी लगी होगी।

4 .आपके विचार से किस कठपुतली ने विद्रोह किया?

उत्तर-

हमारे विचार से स्वतंत्रता के लिए सबसे छोटी कठपुतली ने विरोध किया होगा क्योंकि नई पीढ़ी ही सदैव बदलाव के लिए प्रयास करती है। इसी भावना से प्रेरित होकर उसने अपने बंधनों को तोड़कर स्वावलंबी बनने का प्रयास किया होगा।

5.क्या आपको दूसरों के इशारों पर काम करना अच्छा लगता है? इसका तर्कसंगत उत्तर दीजिए।

उत्तर-

कदापि नहीं, हमें दूसरों के इशारों पर पलना बिलकुल पसंद नहीं है। इससे हमारी आज़ादी का हनन होता है, साथ ही प्रत्येक स्वाभिमानी व्यक्तियों के विचारों के विपरीत है। अतः स्वाभिमानी व्यक्ति अपनी शर्तों पर स्वच्छंद जीना पसंद करते हैं। अतः हमें दूसरों के इशारों पर काम करना अच्छा नहीं लगता है।